04.05.20

अध्ययन सामग्री
बी.ए. (संस्कृत) पार्ट 3
प्रश्नपत्र - सप्तम
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच.डी. जैन कॉलेज
आरा (वी.कुं० सिं० वि०)

इन्द्रवज्रा

इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण —

'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः'

इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में 11 अक्षर होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु होते हैं।

उदाहरण —

S S |	S S |	| S |	S	S
स्यादिन्द्र	वज्राय	दितौज	गौ	गः
तगण	तगण	जगण	गुरु	गुरु

उदाहरण —

वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्तं मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम् ।
छायापथेनेव शरत्प्रसन्नमाकाशमाविष्कृतचारुतारम् ॥

S S |	S S |	| S |	S	S
वैदेहि	पश्याम	लयाद्वि	भक्त	म्
तगण	तगण	जगण	गुरु	गुरु

S S |	S S |	| S |	S	S	
मत्सेतु	नाफेनि	लमम्बु	रा	शिम्	।
तगण	तगण	जगण	गुरु	गुरु	

S S I S S I I S I S S
द्यायाप थनव शरत्प्र सन्नम्
तगण तगण जगण गुरु गुरु

S S I S S I I S I S S
आकाश मानिष्क तचारु ता रम्
तगण तगण जगण गुरु गुरु

यहाँ पर प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण तथा अन्त में दो गुरु हैं। अतः इन्द्रवज्रा छन्द है।

उपेन्द्रवज्रा

उपेन्द्रवज्रा का लक्षण –

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ

जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु हों, उसे उपेन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं। उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में 11 अक्षर होते हैं।

उदाहरण –

I S I S S I I S I S S
उपेन्द्र वज्राज तजास्त तो गौ
जगण तगण जगण गुरु गुरु

अन्य उदाहरण –

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

I S I S S I I S I S S
त्वमेव माताच पिता त्व मेव
जगण तगण जगण गुरु गुरु

।ऽ।	ऽ ऽ ।	।ऽ।	ऽ ऽ
त्वमेव	बन्धुश्च	सखात्व	मे व
जगण	तगण	जगण	गुरु गुरु
।ऽ।	ऽ ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
त्वमेव	विद्याद्र	विणत्व	मे व
जगण	तगण	जगण	गुरु गुरु
।ऽ।	ऽ ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
त्वमेव	सर्वं म	मदेव	दे व
जगण	तगण	जगण	गुरु गुरु

यहाँ पर प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण, एक जगण और अन्त में दो गुरु हैं। पाद के अन्त का लघु वर्ण भी विकल्प (कभी-कभी) से गुरु हो जाता है। इस श्लोक में अन्त का 'व' गुरु है। अतः यह उपेन्द्रवज्रा छन्द है।

उपजाति

उपजाति का लक्षण —

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ॥

इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के लक्षणों से युक्त जिस छन्द के चरण हों, उसे उपजाति छन्द कहते हैं।

उदाहरण —

अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातोऽस्मि सद्यो विशदान्तरात्मा
चिरस्य निक्षेपमिवार्पयित्वा ॥

ऽ ऽ।	ऽ ऽ।	।ऽ।	ऽ ऽ
अर्थो हि	कन्यापर	कीय	एव
तगण	तगण	जगण	गुरु गुरु

— इन्द्रवज्रा

S S I | S S I | I S I | S S
तामभ्य | सम्प्रेक्ष्य | परिग्र | ही तुः — इन्द्रवज्रा
तगण | तगण | जगण | गुरु गुरु

S S I | S S I | I S I | S S
जातोऽस्मि | सच्चोवि | शदान्त | रात्मा — इन्द्रवज्रा
तगण | तगण | जगण | गुरु गुरु

I S I | S S I | I S I | S S
चिरस्य | निक्षेप | मिवार्प | यित्वा — उपेन्द्रवज्रा
जगण | तगण | जगण | गुरु गुरु

अन्य उदाहरण —

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः॥

S S I | S S I | I S I | S S
संचारि | णीदीप | शिखेव | रात्रौ — इन्द्रवज्रा
तगण | तगण | जगण | गुरु गुरु

S S I | S S I | I S I | S S
यं यं व्य | तीयाय | पतिंव | रा सा — इन्द्रवज्रा
तगण | तगण | जगण | गुरु गुरु

I S I | S S I | I S I | S S
नरेन्द्र | मार्गाट्ट | इव प्र | पे दे — उपेन्द्रवज्रा
जगण | तगण | जगण | गुरु गुरु

I S I | S S I | I S I | S S
विवर्ण | भावं स | सभूमि | पा लः — उपेन्द्रवज्रा
जगण | तगण | जगण | गुरु गुरु

इस श्लोक के प्रथम, द्वितीय चरण में इन्द्रवज्रा, तृतीय और चतुर्थ चरण में उपेन्द्रवज्रा है। अतः यह उपजाति छन्द है।